संस्कृति : संस्कृताश्रिता

डॉ. संजीवनी श्रीपाद नेरकर

भारतीय संस्कृति की धरोहर है हमारी संस्कृत भाषा | प्राचीन एवं वैंदिक सभ्यता को हमारी संस्कृत भाषा ने सझोके रखा
है |

भारतीय संस्कृती मे निहित आचार प्रणाली, विचार प्रणाली एवं उपासना प्रणाली ये हमारे संस्कृत भाषा के साहित्य में प्राचूर्य एवं समृद्ध भाव से दिखाई देती है |मेरा प्रयास यही है के मै इस विषय पर सूक्ष्म रीति से अपना चिंतन प्रदान कर सकू |

1. आचारप्रणाली (Way of Living) :-
संस्कृत साहित्य मे जो जीवनप्रणाली लिखी गयी है वो
आदर्श स्वरूपा है | अपितु यह आदर्श भूमिकानुरूप भी दिखाई देता है | वैंदिक साहित्य में विविध देवताओकी भूमिका, कार्य तथा कठोपनिषद में नचिकेता, रघुवंश में रघुराजाओका चरित्र वर्णन, शाकुंतल में कण्व मुनी, दुष्यंत शकुंतला, स्वप्न वासवदत्तम में वासवदत्ता, भारवि का किरतार्जुनीयम, रामायण के आदर्श राम तथा अन्य आदर्श पात्र, इस तरह के बहुत सारे उदाहरण स्वरूप आदर्श जीवन प्रणाली या अपने भूमिका को यथार्थ रूप से सार्थकत्व प्रदान करने वाले चरित्र को भारतीय जीवन पद्धती की उत्कृष्ट कला ऐसा हम कह ही सकते है |
वैंदिक सूक्तो मे श्रद्धा सूक्त जैसे सूक्त हमे यहा सिखाते है के हमे किसधारणा के साथ अपनी जिंदगी को व्यतीत करना है| इस तरह अनेक आदर्श स्वरूप बातो को हम हमारे साहित्य मे
देख सकते है |

2. विचार प्रणाली (Way of Thinking) :-
इस प्रणाली को संस्कृत साहित्य मे हम पूर्ण विधायक रूप के साथ ही देखते है | एक अच्छा मन हे अच्छे विचारो को जनहित करने की क्षमता रखता है, 'तन्मे मन : शिवसकल्पमस्तु |' (मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो)
' आ नो भद्रा : क्रतवो यंतू विश्वत: ' (विश्व के सभी शुभचिन्ह हमे प्राप्त होवे) असे सद विचारू को कथन करने वाली हमारी वेद वाणी, जो संपूर्ण मानव जाती को किसी भी काल, किसी भी भूमिका के,कार्य के लिए तथा किसी भी परिस्थिति के लिए मार्गदर्शक स्वरूप ही है | वेदो की तरह उपनिषद दर्शन पुराण वेदांग इ. सभी ग्रंथो मे सद् विचारो के प्रगल्भता व्यापकता ही दिखाई देती है | श्रीमद्भागवत गीता तो मन, बुद्धी एवं विचार मानसिक क्रियाओ का व्यवस्थापन ग्रंथ ही
है | पातंजल योगसूत्र तो मन को ही संकल्पित कर लिखा गया है, ऐसा मुझे लगता है |
3. उपासना प्रणाली (Way of Worship) :-
संस्कृत साहित्य मे भक्ती उपासना तथा उसके विविध मार्ग स्थिती इन सभी को भी उद्धृत वा स्पष्टीकृत किया गया है |

' श्रद्धा भगस्य मूर्धनि |' ' एको वै ब्रह्म |',' राष्ट्रो वै दैवतम |', इत्यादी इन सभी वेदवाक्य में महत् उपासना पद्धती दिखाई देती है जो पशुत्व को मानव्य तथा मानव्य को देवत्व प्रदान करने का सामर्थ्य रखती है| "यद भावो तद भवति ' यह क्या कर हमारा तत्वज्ञान हमे किसका चिंतन करना चाहिए यह सिखाता है | उपासना के तीनो मार्ग -ज्ञान,कर्म तथा भक्ती यह हमारे संस्कृत साहित्य मे वेदो से लेकर गीता तक विवेचित दिखाई देता है | कर्म ही हमारी पूजा है - ' स्वे स्वे कर्मण्यभिरत :...' इसीलिए अपने अपने कर्तव्य बुद्धी के प्रमाणित सत्य कर्म करने से हमे शाश्वतसिद्धी भी मिल सकती है | उपासना प्रणाली मे स्तोत्र वाs.मय का भी बडा योगदान
है | मन को एकाग्र करने हेतू योगशास्त्र जैसे कई ग्रंथ मनुष्य के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते है | मनुस्मृति मे अभ्यास करते समय हमारे बैठक भी कैसी होनी चाहिये इसका भी सूक्ष्म चिंतन दिखाई देता है |
भारतीय गरिमा एवं भारतीयत्व निर्माण तथा स्थिर करणे मे संस्कृत भाषा ज्ञान एवं साहित्य का माध्यम प्रभावी होगा | यह विचार रखते समय में कुछ मुख्य बिंदू पर प्रकाश डालती हु |

1. भाषा सुमख्या मधुरा :

यह संस्कृत भाषा प्राचीन कालसे अस्तित्व मे है | अत : भारत की मुख्य प्राचीन भाषा के रूप मे हम इसे अभिलक्षित कर सकते है | आज सभी भाषा तथा प्रदेश अंतरप्रतिबद्ध रूप मे है अत: भाषावाद उभर आया है संस्कृत भाषा किसी एक व्यक्ति , एक समूह,एक राष्ट्र, एक प्रदेश की भाषा नही है अतः हम संस्कृत को उस हर एक व्यक्ती,उस हर एक राष्ट्र की भाषा कह सकते है जिसे स्वयं विकसित,प्रकाशित अवस्था मे ज्ञान के माध्यम से जाना
है | इसी कारण यह संस्कृत भाषा सुमुख्या रूप में
द्योतित होती है और इस भाषा मे माधुर्य तथा प्रसाद, ओज गुण अंतरनिहीत है | सुभाषित,श्लोक, तथा स्तोत्र साहित्य की माधुर्यताने सभी जनो को अंतर संवेदित किया है |

2. प्रचूर साहित्य :

भारत के गरिमा को निवेदित करने वाला साहित्य जो प्राचीन है, वो संस्कृत भाषा मे निहित है | भारतीय सभ्यता एवम संस्कृती को कथन करने वाला प्राचीन साहित्य संस्कृत भाषा मे लिखित हैं | वेद साहित्य, वैदिक साहित्य जिसमे वेदांग, दर्शन,सूत्र वांग्मय, उपनिषद,पुराण साहित्य, मध्ययुगीन साहित्य, कवि कुलगुरू कालिदास इत्यादी के महाकाव्य, भारवि इत्यादी के महाकाव्य, भास इत्यादी के नाटक वांग्मय तथा आधुनिक काल मे शिवराज्योदय इत्यादी काव्य तक विविध कालकी समाज,राज्य,अर्थ, विवाह, कुटुंब व्यवस्था से ब्रम्हांड तक सभी बिंदुओ का दर्शन मिलता है | भारतीय संस्कृती की आचार प्रणाली , विचार प्रणाली तथा उपासना प्रणाली इस संस्कृत भाषा के साहित्य मे निहीत हैं,अतरेव परंपरया श्रूयते - संस्कृति: संस्कृताश्रिता |

3. विधायक शब्द विन्यास :

अभ्यासक को संस्कृत भाषा का साहित्य सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता हैं | इस उक्ती के पक्ष मे बहुत से उदाहरण दे सकती हु | प्रभूसम्मितोपदेशो को अगर हम देखे तो जैसे - सत्यं वद | धर्मं चर | इसको असत्यं मा वद |
अधर्मं मा चर | ऐसा भी कहा जा सकता था, अपि तु विधायक कृतिशीलता निर्माण हेतू सकारात्मक चीजो को मैं पुन: पुन: उच्चारित करुंगी तो वह साधू वाद हममे सकारात्मक कृतीत्व को प्रेरित करेगा |

इसे ही हम आज के power of spoken words के रूप मे भी देख सकते है | हमारे व्याकरण महाभाष्य मे भी कहा गया है - ' 'एको शब्द: सुप्रयुक्त : सम्यक्ज्ञात : कामधूक् भवति |'इसे हम psychology क्षेत्रमे देखे तो वे भी यह बात मानेंगे की हमारा मन सकारात्मक संचेतना से ही जागृत, उल्हसित एवं स्थिर हो सकता है | अथवा ये मत करो हो मत करो, ऐसे ही हम नकारात्मक सूचना देंगे, तो हमारा मन उलट दिशा मे ही प्रवृत्त हो जायेगा | यही बात को हमारा तर्कशास्त्र भी संमती देता है | ' अग्निना सिंचेत् | ' अग्नी से सिंचन ये तो संभाव्य ही नही है इसलिये योग्य शब्द, साकांक्ष शब्द का ही प्रयोग करना उचित होगा, इससे ही योग्य निर्मिती संभाव्य है | सुभगा, साधू सज्जन आर्य ऐसे संबोधन संस्कृत में है,जो सुनने वाले के मन मे आदरभाव तथा नीतिमत्ता को जनित करता हैं | अग्नि सुक्त मे कहा है - ' अग्ने नय सुपथा राये |' यहा ' सुपथा ' it means, 'on the right track' ऐसा अर्थ प्रतीत होता
है | तथैव, ' श्रद्धया विंदते वसु : | ' ऐसा श्रद्धा सूक्त मे भी कहा गया है | ' आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वत : |' ' तन्मे मन : शिवसंकल्पमस्तु |' ऐसा शुक्ल यजुर्वेद मे भी कहा है | ऐसे कई उद्धरण संस्कृत वेदवाङ्मय मे मिलते है | जिनका अगर हम तात्पर्य स्वरूप देखे तो 'परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम् |' तथा ' असतो मा सत् गमय ', ' यद् भद्रम् तन्न आ सुव | ' यही मिलेगा |

4. सुव्यवस्थित व्याकरण परंपरा:

माहेश्वर सूत्र से आचार्य पाणिनी जीने अष्टाध्यायी को लिखा | जिससे अनंत काल तक संस्कृत भाषा संवर्धित तो होगी ही, अपितु नियमप्रतिबद्ध भी रहेगी | एक अलमात्र को भी उन्होने निरर्थक नही कहा है | हर एक चीज को हर एक अक्षर हरेक शब्द को बहोत ही सुंदरता तथा सजगता से रखा है | नियम प्रतिबद्ध किया है जिससे कभी भी कुछ अनायास विभाग निर्माण नही हो सकता, इसी कारण हमारे संस्कृत भाषा मे असभ्यवाणी या गाली या कमी दिखाई देती है |

5. विश्व प्रार्थना की कामना :

हमारी वेद वैदिक प्रार्थनाओ मे जिस तरह व्यक्तिगत स्वरूप का विचार है,उसी तरह संपूर्ण विश्व की मानव जाति के लिए भी मांगल्य इच्छा की गई है | 'वसुधैव कुटुम्बकम् | ', " सर्वे जना सुखिनो भवन्तु |" सर्वे संतु निरामया :| ऐसी सब विश्व के लिए ही क्षेमकी कामना करना, बस इसी भाषा को शक्यप्राय हुआ दिखता है | हमारी राष्ट्र वैदिक प्रार्थना अर्थात वैदिक राष्ट्रगान

" आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम।
आ राष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम॥ दोग्ध्री: धेनुर्वोढ़ाऽनड्वानाशुः सप्ति:
पुरन्धियोषा जिष्णु रथेष्ठा:। " (शुक्ल यजुर्वेद अ.22, मंत्र22)

इस मंत्र का अगर अर्थ हम देखेंगे,तो हमे हमारे वेदिक ऋषियों की समष्टी भावना तथा समष्टी कल्याण का हेतू अतीव पारदर्शक था, ये समझ आयेगा | यहा इस मंत्रका अर्थ हमे जानना होगा -

" हे ब्रह्म हमारे देश मे विद्वान समस्त वेद आदि ग्रंथो से दैदिप्यमान उत्पन्न हो,
शासक पराक्रमी शस्त्र निपुण और शत्रु को अत्यंत पीडित करने वाले उत्पन्न हो, गाव दुग्ध देने वाली और बेल भार ढोने वाला हो,
प्रत्येक मनुष्य विजयप्राप्तीवाले स्वभाव वाला, रथगामी और सभा प्रवीण हो,
इस यज्ञ कर्ता के घर विद्या, योवन संपन्न और शत्रु को परे फेकने वाले संतान उत्पन्न हो, हमारे राष्ट्र के प्रत्येक मनुष्य का योग और क्षेम उसके उपभोग के लिए सक्षम हो |"

यह अर्थ हम पडेंगे तो यहा ' मैं ' का बिलकुल ही स्थान नही दिखाई देगा |

बस, दुसरे का ही क्षेम विचार है | समूहकल्याण की ही कामना है और विश्व मांगल्य का ही सर्वतोपरी विचार है | इतना ही नही,व्यक्तिगत स्तर पर भी अश्वं च मे,धनं च मे,आदि बहुत सी चीजे खुद के लिए मांगी गई है | आज के उपलक्ष में "लॉ ऑफ अट्रॅक्शन" यह हम इसे कह सकते है | जो हमे चाहिये वो तो हमे मांगना ही पडेगा | संपूर्ण ब्रम्हांड हमे सारी चीजे देने के लिए बैठा हे| वह तथास्तु कहता है |अभी प्रश्न यहा है कि,हम क्या, कैसे, कब और किन शब्दों मे मांगते है ? और वह भी सश्रद्ध-अंतकरण से | हमारा तत्त्वज्ञान कहता है "श्रद्धा भगस्य मूर्धनि |" श्रद्धा हमारी "बिलीफ सिस्टीम" ही है जो अमूर्त को भी साकार करा देती है | "ऋषय: मंत्रद्रष्टार: "हमारे ऋषिगण मान्यवर visualization से परिचित थे, मंत्रको ऋषी गणो ने देखा था |जो हमे चाहिये वह हमे पहले ही देखना होगा, यह visualization है, और पहले ऋषी गणो ने मंत्र को देखा और उनके सामने मंत्र प्रगट हो गये, ऐसा संदर्भ हमने पढा ही है |

6. संस्कृत साहित्य मे आचार एवम उपासना प्रणाली दर्शन :

हमारे संस्कृत साहित्य मे आदर्श की तो खान है, हर एक साहित्य का चरित्र आदर्श ही है | राम, दुष्यंत,शकुंतला, सीता, हनुमंत,मालविका, आदी सभी चरित्र आज के उपलक्ष मे भी आदर्श है |व्यक्तिगत विकास हेतू सभी गुणात्मक एवं चरित्र विकास आदर्शवत है |

इसी तरह हमारी भक्ती तथा उपासना प्रणाली मे भी इतनी शक्ती है, के हम पशुत्व से मानव्य और मानव्य से देवत्व की और चले | और एक प्रगत तथा सुंदर, सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करे | हमारा शारीरिक,मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक,अध्यात्मिक, अधिभौतिक सभी तरह का विकास यहा अपेक्षित है |

निष्कर्ष :-

भारतीय संस्कृती की गरिमा और मान अगर किसी साहित्य मे मिलती है, तो वह है संस्कृत साहित्य | संस्कृत भाषा और साहित्य हमे उच्च ध्येय देते है | हममे योग्य धारणा जगाती है और हमारी आयु पूर्ण तया संतुलित कर हममे "मातृदेवो भव", "पितृ देवो भव", "आचार्य देवो भव", "अतिथी देवो भव", " राष्ट्र देवो भव " की नवसंचेतना को ताजा रखती है | यदि हम ऐसा करेंगे, सोचेंगे तो हम कह सकते है की हम भारत देश के निवासी है, मै भारतीय हु | तिसरा शब्द 'भारतीयत्व ', भारतीय- गुणविशेष | भारत मे हर एक क्षेत्र में प्राचीन काल से एक विशिष्ट गुणाधिष्ठित परंपरा पायी जाती है, उस परंपरा के अगर हम पाईक है तोही हममे भारतीयत्व है, ऐसा हम कह सकते है |

प्राचीन काल से भारतीयोकी उच्च जीवनप्रणाली (Art of Living), विचार प्रणाली (Art of Thinking), उपासना प्रणाली Art of Worship) इससे भारत और भारतीय त्व संपूर्ण विश्व मे सातत्य से गौरवान्वित रहा है |

भारतीय जीवन विचार और उपासना प्रणाली को ही हम भारतीय संस्कृती कहते है और हम जानते है - " संस्कृति : संस्कृताश्रिता | " अत : भारतीयत्व जानने के लिए हमे संस्कृत शिक्षा की और ही बढना होगा | उत्तम जीवन के लिए राम, तथा रामराज्य, इस राज्य की संपूर्ण सुव्यवस्था की झाकी हमे रामायण संस्कृत साहित्य मे मिलती है | उत्तम विचार याने हमारी वेदप्रामान्य विचारधारा, जो हमे प्राचीन काल से आज तक हर एक क्षेत्र मे, हर एक समस्या पर समाधान देती है |" आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वत : |", " सर्वेऽत्र सुखिन : सन्तु |"

समानी व : आकुति : |", इ. मंत्र से हमे ऋषियों की प्रगत विचारधाराये देखने को मिलती है | जो आज आधुनिक यंत्र युग मे भी मनुष्य को मनुष्य बनाये रखती है | और समता, न्याय,बंधुता, सहकार, विवेक बुद्धी, विनयशीलता इत्यादी

विचार संपदा की जागरूकता, आवश्यकता हममे सदा जगाये रखती है | और उपासना प्रणाली के लिये हमे इतने उदाहरण मिलेंगे की हमारी स्याही और हमारा कागज खतम हो जायेगा |
Bhakti is Social Force & Murtipuja is Perfect Science. यथा - " श्रद्धा भगस्य मूर्धनि |" इस प्रकार के तत्व जिस विचारधारा के आधारभूत है, वह उपासना- प्रणाली अत्यंत दृढतया सर्वतोकाल मे विराजमान है | वेदकालीन उपासना जो साधिष्ठान है, अतरेव सफल हैं | भारतीय साहित्य उपासना पद्धती के पाच ही अंगो का अर्थात स्तवन, कवच, हृदय, सहस्त्रनाम,गीता गान करते दिखाई देती है | यह ऐसा साहित्य है जो अथ से लेकर इति तक सब कुछ साफ सिखाता है | और यही श्रद्धावान, धर्मवान, नीतिवान और ज्ञानवान भारतीय ही भारत देश का सच्चा नागरिक है | उसी मे सच्ची भारतीयत्वकी चेतना सचेत दिखाई देती है | यही सच्चा भारतीय स्वामी विवेकानंद बनकर पूरे विश्वको भारत की पहचान सिर्फ दो lines मे करा देता हैं - " I am came in the Nation, where Tailors are make the Man, Gentleman and I came from the Nation where Virtues are make the Man, Gentleman . यहा है सच्चा भारतीयत्व | इसी भारतीयत्व की ओर हमे जाना है | तो भक्ती भाव से ओतप्रोत उपासना पद्धती, वेदप्रामाण्य विचारधारा, संस्कृत भाषा तथा साहित्य और हमारी यौगिक कर्मण्यता को ही हमे अपनाना पडेगा | तभी हमारा भारतदेश फिरसे सोनेकी चिडियाँ बनकर मधुरगान से चहकेगा और भारत माँ की गौरवगाथा फिरसे बनाये रखेगा |

तथ्य स्वरूप यहा हम कह सकते है कि संस्कृत भाषा प्राचीन काल से अपने साहित्य मे भारतीय संस्कृती को निरंतर प्रवाहित कर हमारे पास लातूरही है परंतु इस भारतीय त्व को जानने के लिए हमे अभ्यासक होकर हमारी चिकित्सा बुद्धी को जागृत कर इन साहित्य मे जो अमृतजल कुंभ है उसका जल चखना होगा, तभी यह ज्ञान प्रवाह हम हमारी आनेवाले पिढी को यथार्थ रूपसे प्रदान कर सकेंगे | और तभी हमारी धर्म संस्कृत भाषा, संस्कृती तथा साहित्य के अभ्यासप्रवाह में आदनप्रदान कि निरंतर प्रक्रिया कायम रहेगी | और हमारा यहा भारत देश पुन: - " सुजलाम सुफलाम " होकर सोनेकी चिडियाँ हो मधुर स्वर में चहकता रहेगा |

डॉ. संजीवनी श्रीपाद नेरकर
संस्कृत विभाग प्रमुख,
वै. धुंडा महाराज देगलूरकर महाविद्यालय, देगलूर,
जि. नांदेड
मो. 9766084685
deshmukh.sanjivani@gmail.com